Vol.6 April 2013 No.10
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

रक्तसाक्षी महाशय राजपाल

–प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

महाशय राजपाल एक स्वनिर्मित जीवन के धनी थे। एक अनाथ बालक कहाँ से कहाँ पहुँच गया। इस दृष्टि से वे युवकों के लिए एक आदर्श थे।

आपको वैदिक धर्म के रंग में रंगने वाले व्यक्तित्व का नाम था पं. लेखराम 'आर्य पथिक'।

संयोग की बात है कि दोनों ने लाहौर में ही वीरगति पाई। दोनों ने लाहौर के म्यू हस्पताल में नश्वर देह का परित्याग किया।

पं. गुरुदत्त को छोड़कर आपको आर्यसमाज की प्रथम व दूसरी पीढ़ी के प्रायः सब नेताओं व विद्वानों के निकट आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आप सारे विश्व में वैदिक साहित्य पहुँचाने वाले प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने प्रकाशन द्वारा वैदिक साहित्य का प्रचार किया।

आपने देश, धर्म व जाति की रक्षा के लिए अनेक मौलिक व महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन करके एक इतिहास बनाया।

आर्यसमाजी पत्रकारिता के इतिहास में विशेषांकों की परम्परा के जनक श्री महाशय कृष्ण व आप ही थे।

भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि को अमरीका पहुँचाने वाले मुख्य सहयोगी आप ही थे।

आप अटल ईश्वर विश्वासी, निर्भीक धर्मरक्षक व प्राणों के निर्मोही आदर्श धर्मवीर थे।

महामना मालवीय ने कहा था, " राजपाल एक सच्चे महात्मा थे।" आप पर तीन बार घातक आक्रमण हुए परन्तु आप किंचित् मात्र भी विचलित नहीं हुए।

देश के स्वराज्य संग्राम में आपका विशेष योगदान था। देशप्रेम की भावना भरने वाले क्रान्तिकारी साहित्य प्रकाशन के लिए जान जोखिम में डालकर आप सरकार के कोप भाजन बने।

6 अप्रैल 1927 को धर्म की बलिवेदी पर प्राण चढ़ाकर आपने अमर पद प्राप्त किया।

आप पत्रकार भी थे, साहित्यकार भी थे और प्रकाशक भी थे।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062

Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan April 2013 Vol. 6 No.10
चैत्र-बैसाख 2069-70 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. रक्तसाक्षी महाशय राजपाल 2
-प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 6
-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. महात्मा हंसराज जी के संस्मरण 9
-श्री पिशोरीलाल 'प्रेम'
5. ईसाई मिशनरियों का भारत पर आक्रमण 11
-श्री एस. शंकर
6. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की ऐतिहासिकता
-डॉ. सत्यपाल सिंह 19
7. नवरात्र से जीवन में समरसता और स्वास्थ्य 23
- श्री सीताराम गुप्त
8. आचार्य शंकर एवं मूलशंकर 25
-स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
9. Some Facts about the Ram Setu row
-Ankit Grover 29
10. Evidence from Malaysia about Rama and Ramasetu
-Kalyanaraman 30
11. Brahmacharya is Pure Bliss 31
-M. K. Gandhi
12. Was Einstein a Believer? 33
-Mukul Sharma
13. युवा बम 35
-डॉ. रामदेव प्रसाद 'सिंह'

संपादकीय

ब्रह्मार्पण परिवार को नवसंवत्सर की शुभकामनाएँ।

सन् 1947 में भारत स्वाधीन हुआ। उस समय देश के कर्णधारों के लिए देश को नई दिशा देने का सुअवसर था जब हम देश की प्राचीन संस्कृति, परंपरा, अस्मिता, भाषा, संवत्सर का पुनरुद्धार कर सकते थे। परन्तु हमारे नेता जो अंग्रेजियत में पले-बढ़े थे उन्होंने देश के हित को नजरंदाज कर दिया और हम उसी पुरानी पराधीनता की लीक पर चलते रहे और चले जा रहे हैं। हम केवल यथास्थिति बनाए रखने में विश्वास करते हैं। हम अभी तक न अंग्रेजी का मोह छोड़ सके हैं न ही ईसवी सन् से छुटकारा पर सके हैं।

भारतीय संवत्सर (नववर्ष) प्रथम चैत्र से आरंभ होता है जो इस वर्ष 11 अप्रैल को होगा। इस दिन सूर्य भूमध्य रेखा के ऊपर होता है। इसके बाद वह उत्तरायण की ओर बढ़ने लगता है। भारत में यह नववर्ष विक्रमादित्य के नाम से प्रचलित है। इसी दिन सम्राट् विक्रमादित्य ने शकों को पराजित किया था। इसी दिन महर्षि दयानन्द ने आज से 138 वर्ष पूर्व (1875ई.में) मुंबई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। किसी समय नववर्ष का यह दिन विश्वभर में मनाया जाता था। ईरान और इराक में इस दिन नवरोज (नया दिन) नामक पर्व मनाते हैं। यहूदी लोग भी इसे राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। पहले इसका नाम 'पास्का' था।

हमारे देश में विक्रमी संवत् का विशेष महत्त्व है। इसी के अनुसार हमारे सभी धार्मिक कृत्य संपन्न होते हैं। चाहे बच्चे का जन्म दिन हो, नामकरण हो, विवाह हो, गृह प्रवेश हो

या किसी का राजतिलक हो सभी कार्य विक्रमी संवत् के अनुसार किए जाते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस दिन का महत्व

यह दिन सृष्टि रचना का प्रथम दिन है। आज से एक अरब सत्तानवे करोड़, उन्तीस लाख, उनचास हजार, एक सौ तेरह वर्ष पूर्व ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की थी। श्रीराम ने लंका विजय के बाद अयोध्या लौटने के बाद राज्याभिषेक के लिए इसी दिन को चुना था। इसी दिन धर्मराज युधिष्ठिर का राजतिलक हुआ था। इसी शुभ दिन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार, सिक्खों के द्वितीय गुरु अंगददेव और प्रसिद्ध सिंधी संत झूलेलाल का जन्म हुआ था। इन सबको हमारा श्रद्धापूर्ण नमन!

यह दुर्भाग्य है कि हमारी सरकार सभी भारतीय तत्वों का त्याग कर तथाकथित आधुनिकता को पकड़े हुए है। प्रायः सभी नव स्वाधीन देशों ने अपने देश की संस्कृति, परंपराओं का आदर करते हुए अपनी भाषा, अपने संवत् को अपनाया है परन्तु हमारे देश ने पंथनिरपेक्षता के नाम पर अपने सभी राष्ट्रीय तत्वों का परित्याग कर दिया है। उन्हें अतीत के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की चिंता नहीं है बस चिन्ता है वोट बैंक की। इसलिए वे केवल मुस्लिम तुष्टीकरण और आरक्षण की देश के लिए हानिकारक नीति पर चल रहे हैं। आज के दिन हम बाबा अम्बेडकर का स्मरण करते हैं जिन्होंने देश के संविधान का निर्माण किया और कहा कि आरक्षण दस वर्ष में समाप्त कर दिया जाए। इसी में दलित समाज और देश का भला है।

आइए, नववर्ष के इस शुभ दिन संकल्प लें कि हम अपने देश की संस्कृति, भाषा, परंपरा की रक्षा करने का प्रयत्न करेंगे।

संपादक

सांख्य दर्शन
(अध्याय-1, सूत्र-65)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

अब अगले सूत्र में प्रत्यक्ष प्रमाण के बाद अनुमान प्रमाण का लक्षण बताते हैं। सूत्र है-

प्रतिबन्धदृशः प्रतिबद्धज्ञानम् अनुमानम्।।65।।

अर्थ- (प्रतिबन्धदृशः) व्याप्ति के ज्ञाता को व्याप्य से (प्रतिबद्धज्ञानम्) व्यापक का ज्ञान (अनुमानम्) अनुमान है।

भावार्थ- 'बन्ध' संबंध को कहते हैं। दो वस्तुओं का एक दूसरे से जो नियत संबंध होता है उसे 'प्रतिबन्ध' कहते हैं। इसी को 'व्याप्ति कहते हैं। दो वस्तुओं का ऐसा संबंध जिसमें एक के बिना दूसरा न रहे, जैसे- जिस वस्तु की उत्पत्ति होती है- वह अनित्य होती है या जो अनित्य है उसकी उत्पत्ति होना आवश्यक है। इस प्रकार अनित्य होने और उत्पत्ति वाला होने का नियत संबंध है। वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। एक और उदाहरण देखें। जो त्रिगुणात्मक होता है वह परिणामी होता है या जो परिणामी है वह त्रिगुणात्मक होता है। परिणामी और त्रिगुणात्मक का नियत संबंध है। हम इनमें से किसी एक के आधार पर दूसरे का निश्चय कर सकते हैं। जो निश्चय किया जाए वह साध्य कहलाता है। हेतु और साध्य के परस्पर नियत संबंध को 'प्रतिबन्ध' या 'व्याप्ति' कहते हैं। इस तरह के संबंध को हम एक दूसरे के 'होने' और 'न होने' के द्वारा प्रकट करते हैं।

जैसे- त्रिगुणात्मक 'होने' पर 'परिणामी होना', 'न होने' पर नहीं होना' या परिणामी होने पर त्रिगुणात्मक होना, न होने पर नहीं होना। जब 'होने' के द्वारा दो धर्मों के संबंध को बताया जाएगा तब उसे 'अन्वय व्याप्ति' और जब उसे 'न होने' के द्वारा बताया जाएगा तो उसे 'व्यप्तिरेक व्याप्ति' कहा जाएगा। इस प्रकार जिस व्यक्ति को व्याप्ति का ज्ञान होता है वह एक हेतु के द्वारा दूसरे नियत सहयोगी संबंधी (साध्य) का ज्ञान कर लेता है। इसी को 'अनुमान' कहते हैं। यह अनुमान का ज्ञान अर्थात् 'अनुमान' प्रमाण कहलाता है। व्याप्य (हेतु) और व्यापक (साध्य) के नियत साहचर्य का नाम भी व्याप्ति है। व्याप्तिज्ञानपूर्वक व्याप्य से व्यापक का ज्ञान होता है। इस प्रकार 'व्याप्य' प्रमाण माना जाता है। जब व्याप्य-व्यापक के नियत साहचर्य को 'अन्वय व्यप्तिरेक' द्वारा समान रूप से बताया जा सके तब उसे 'समव्याप्ति' कहते हैं, जैसे उत्पत्ति धर्म वाला होना और अनित्यत्व में अथवा परिणामित्व और त्रिगुणात्मकत्व में। इन धर्मों में हम कह सकते हैं, जहाँ उत्पत्ति धर्मकत्व है वहाँ अनित्यत्व है, जहाँ अनित्यत्व है वहाँ उत्पत्ति धर्मकत्व भी है। उसी प्रकार जहाँ उत्पत्ति धर्मकत्व नहीं है वहाँ अनित्यत्व नहीं है। जहाँ अनित्यत्व नहीं वहाँ उत्पत्ति धर्मकत्व भी नहीं है। इन धर्मों के समान साहचर्य होने से इनकी व्याप्ति 'समव्याप्ति' कही जाती है।

कहीं-कहीं दो धर्मों या पदार्थों का दोनों रूपों में नियत साहचर्य नहीं रहता। वह प्रायः उन्हीं पदार्थों में होता है जिनका परस्पर कार्यकारणभाव हो। ऐसे स्थलों में कार्य के

अस्तित्व से कारण का अनुमान नहीं हो पाता। कभी-कभी ऐसा होता है कि कारण के विद्यामान रहने पर भी कार्य अस्तित्व में नहीं आता। जैसे- धूम के दीखने से अग्नि का अनुमान हो जाता है, परन्तु अग्नि के अस्तित्व में सभी जगह यह आवश्यक नहीं कि वहाँ धूम अवश्य उत्पन्न हो। जब ईंधन (लकड़ी) में कुछ आर्द्रता (नमी) होगी तभी धूम उत्पन्न होगा, दहकते अंगारों में धूम के उत्पन्न होने की संभावना नहीं।

इसी प्रकार वर्षा को देखने पर बादल के अस्तित्व का अनुमान हो जाना ठीक है परन्तु बादल की उपस्थिति होने पर हमेशा वर्षा हो जाने का अनुमान नहीं किया जा सकता। कई बार ऐसा होता है कि पुरोवात की उपस्थिति में बादल आ जाने पर भी हवा की तीव्रता के कारण वर्षा नहीं हो पाती। इसलिए प्रत्येक ऐसे स्थान पर जहाँ बादलों का अस्तित्व हो, वर्षा होने का सही अनुमान नहीं किया जा सकता। ऐसे स्थलों में दो धर्मों की व्याप्ति का नाम 'विषम व्याप्ति' होता है। जब धूम हो तो वहाँ अग्नि होगी ही यह व्याप्ति नहीं कही जा सकती। दहकते अंगारे या गरम (तप्त) लोहे के गोले में आग के होते हुए भी धूम नहीं होता। इसीलिए यह 'विषम व्याप्ति' है। मतलब यह है कि अनुमान करते समय दोनों धर्मों के साध्य-साधनभाव का प्रथम निश्चय कर लेना आवश्यक है।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

महात्मा हंसराज जी के संस्मरण
(19 अप्रैल को जन्मदिवस पर)

-श्री पिशोरीलाल 'प्रेम'

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्वाण अर्धशताब्दी के अवसर पर अजमेर में मुझे महात्मा हंसराज जी के शुभ दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय मैं नया-नया आर्यसमाजी बना था। मेरी आयु भी कम थी परन्तु फिर भी मैं महात्मा जी की सौम्य मूर्ति और मधुर वाणी से अति प्रभावित हुआ।

प्रभावशाली व्यक्तित्व

उस समय उत्सव में एक प्रस्ताव रखा गया। प्रस्ताव क्या था, यह तो मुझे याद नहीं, परन्तु इतना याद है कि उस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में दोनों ओर से बहुत वाद-विवाद हुआ। दोनों पक्षों ने एक दूसरे की कटु आलोचना की। वातावरण में बहुत तनाव उत्पन्न हो गया था। उस समय यद्यपि महात्मा हंसराज का शरीर कुछ निर्बल था, फिर भी उन्हें दो महानुभावों ने सहारा दे कर धीरे-धीरे वेदी पर पहुँचाया। महात्मा जी ने थोड़े से शब्दों में अपने विचार प्रकट किये। इससे सारा वातावरण शांत हो गया। इसके पश्चात् मुझे पुनः महात्मा जी के दर्शन नहीं हो सके। परन्तु जिस समय मुझे उनका ध्यान आता है, उनकी सौम्य मूर्ति मेरी आँखों के सामने आ जाती है।

ईसाई मुख्याध्यापक से टक्कर

महात्मा जी की सादगी, सरलता, तप, त्याग और मधुर वाणी के विषय में विस्तार से न कह कर दो घटनाओं का वर्णन अवश्य करना चाहता हूँ। महात्मा जी के बाल्यकाल की एक घटना इस प्रकार है। जब वह मिशन हाई स्कूल लाहौर में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उस समय एक बार स्कूल के मुख्याध्यापक ने प्राचीन आर्यों के सम्बन्ध में कुछ अनुचित शब्द कह दिये। उन्होंने कहा कि प्राचीन आर्य मूर्तिपूजक थे,

वृक्षों तथा पत्थरों की पूजा करते थे। वे असभ्य और अशिक्षित थे। बालक हंसराज इन बातों को न सह सके। उन्होंने निर्भीकता से मुख्य अध्यापक की इन बातों का विरोध किया और आक्षेपों का उत्तर दिया। इस पर उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। परन्तु उनके अन्य सद्गुणों के कारण दो दिन के पश्चात् पुनः उन्हें स्कूल में बुला लिया गया।

जीवन दान

इसके पश्चात् उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण क्षण वह था, जब उन्होंने अपने लक्ष्य को साकार रूप देने का मार्ग चुना। बी. ए. की परीक्षा में सारे कालेज में द्वितीय रहे (प्रथम आने वाले भी आर्य समाज के महान् विद्वान् पं. गुरुदत्त जी थे)। यदि महात्मा जी चाहते, तो वकालत पास करके लाखों में खेलते, अथवा सरकारी नौकरी करके धन और सम्मान दोनों प्राप्त कर लेते। यदि वह चाहते तो एक और परीक्षा दे कर असिस्टेंट कमिश्नर बन सकते थे। परन्तु तप और त्याग की मूर्ति महात्मा हंसराज ने सुख और सब प्रकार के वैभव के मार्ग को ठोकर मारते हुए काँटों भरे मार्ग को अपनाया। उस समय आर्यसमाजी महर्षि दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् उनके स्मारक के रूप में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना करना चाहते थे। परन्तु धनाभाव के कारण ऐसा करना असम्भव प्रतीत होता था। तब उस तपस्वी महात्मा ने बड़ी वीरता से कालेज को अपनी अवैतनिक सेवाएँ अर्पित कर दीं। 25 वर्ष तक महात्मा जी ने डी. ए. वी. कालेज में कार्य किया। इसके पश्चात् जब उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का कार्यभार सँभाला, तब भी वह अपना कुछ समय कालेज को देते थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज स्थान-स्थान पर डी. ए. वी. कालेज और स्कूल सफलतापूर्वक चल रहे हैं तथा अन्य सभी स्कूलों और कालेजों से अधिक उन्नतिशील हैं।

ईसाई मिशनरियों का भारत पर आक्रमण

–श्री एस. शंकर

ईसाई पादरी सैकड़ों वर्षों से हिन्दू धर्म व उसके देवी देवताओं को झूठा बतलाकर उन्हें गालियाँ देकर उनके प्रति घृणा फैला रहे हैं। नियोगी कमीशन (3.55) की रिपोर्ट के अनुसार पादरी लोग प्रचार करते हैं :– "राम और कृष्ण मुक्तिदाता नहीं हो सकते, क्योंकि कृष्ण चोर था और राम पापी था। सिर्फ ईसाई धर्म ही मानव समाज का आध्यात्मिक व भौतिक कल्याण कर सकता है।" ऐसे अनेक झूठे प्रचार के कारण 95 करोड़ हिन्दुओं का नैतिक पतन हो रहा है। अतः यहाँ इस झूठ का खंडन किया जा रहा है। यद्यपि शहरों में ईसाई धर्म का स्वरूप सेवा और शिक्षा के जरिये बहुत आकर्षक दिखलाया जाता है, पर आदिवासी गाँवों में इसका वास्तविक रूप बहुत विकृत है। ईसाई और मुस्लिम देश करोड़ों रुपए भेजकर धर्मपरिवर्तन द्वारा इस देश को अपना गुलाम बना रहे हैं। ताकि हिन्दू भारत में अल्पसंख्यक हो जाएँ। फिर उनकी वही दुर्दशा होगी जो फीजी, कश्मीर, बांग्लादेश व पाकिस्तान में हुई है।

भारत में अपना वोट बैंक बनाने के लिए 50 वर्ष नेहरू–गाँधी परिवार तथा अन्य सैक्युलरवादी नेताओं द्वारा हिन्दुओं के साथ विश्वासघात करके उनके धर्म परिवर्तन की अंधाधुंध छूट दी गई। धर्म निरपेक्षता के नाम पर स्कूलों में कुरान और बाइबिल तो पढ़ाई जा सकती है, पर हिन्दुओं की विश्व प्रसिद्ध गीता और रामायण नहीं पढ़ाई जा सकती। इससे अज्ञान के कारण हिन्दू अपना धर्म छोड़कर ईसाई हो रहे हैं और उनमें दुराचार और भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है जिससे देश बर्बाद हो रहा है।

ईसाई मिशनरी और गाँधी जी

गाँधी जी ने कहा "हमें गोमांसभक्षण और शराब पीने वाला ईसाई धर्म नही चाहिए।" (हरिजन 6.3.37)। गाँधी जी ने आगे कहा "ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं की ऊँच–नीच व अस्पृश्यता

को दूर नहीं कर सकते। यह कार्य खुद हिन्दुओं को ही करना होगा।" गाँधी जी के अनुसार, "धर्म परिवर्तन वह जहर है, जो सत्य और व्यक्ति की जड़ों को खोखला कर देता है। मिशनरियों के प्रभाव से हिन्दू परिवारों का विदेशी भाषा, वेषभूषा, रीतिरिवाज के द्वारा विघटन हुआ है। यदि मुझे कानून बनाने का अधिकार होता, तो मैं धर्मपरिवर्तन बंद करवा देता। इसे तो मिशनरियों ने एक व्यापार बना लिया है। धर्म आत्मा की उन्नति का विषय है। इसे रोटी, कपड़ा या दवाई के बदले में बेचा या बदला नहीं जा सकता।"

ईसाइयों का मानव प्रेम कैसा है?

ईसाई मिशनरी व मदर टेरेसा जो गरीबों और पूरे मानव समाज से प्रेम करने का दम भरते हैं, वे तब क्यों चुप रहे, जब अंग्रेज शासक व गोवा के शासक आजादी के आंदोलन में देशभक्तों को गोलियों से भून रहे थे। 3 लाख हिन्दुओं पर आतंकवादी भयंकर अत्याचार कर रहे थे। चर्च तथा मदर टेरेसा ने कभी भी जनता के दुखों को दूर करने का प्रयत्न नहीं किया, क्योंकि उससे गरीब लोग ईसाई बनना बंद हो जायेंगे। बल्कि मिशनरियों ने तो आजादी के आंदोलन में अत्याचारी अंग्रेज सरकार की मदद की।

धर्मपरिवर्तन का देशविरोधी स्वरूप

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी राजकुमारी अमृतकौर, जो स्वयं ईसाई थीं, कहती थीं कि, "बहुत से धर्मांतरित व्यक्ति राष्ट्र विरोधी हो गये हैं।" वे भारत के बजाय रोम को अपनी पुण्यभूमि मानकर अपने देश की पवित्र नदियों, पर्वतों, देशवासियों, व भारतीय भाषा, वेशभूषा और संस्कृति से घृणा करने लगे हैं।

टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार उल्फा आतंकवादियों को मिशनरी मदद पहुँचा रहे हैं। उन्हें विदेशी शस्त्र दिये जा रहे हैं। नागालैंड और मिजोरम, जहाँ ईसाई आबादी 90 प्रतिशत से अधिक हो गई है, अब वे भारत में विद्रोह करके अलग होने

की माँग कर रहे हैं। मिशनरियों का यह साम्राज्यवादी उद्देश्य है, जिसके द्वारा वे सारे भारत पर अपना कब्जा करके उसका शोषण करना चाहते हैं।

धर्मपरिवर्तन के कारण विश्व की जातियों व देशों के बीच धार्मिक घृणा और अशांति फैली है। मध्ययुग के अनेक युद्ध धर्मपरिवर्तन के कारण ही हुए थे। इसलिए हिन्दू धर्म धर्म-परिवर्तन को एक घटिया कार्य मानता है।

धर्म परिवर्तन का उद्देश्य

मिशनरी भारत के गाँवों की गरीब जनता को शीघ्र ईसाई बनाकर भारत के धार्मिक, राजनैतिक और भाषा के आधार पर टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते हैं, ताकि उन्हें निरंतर लूटा जा सके। कट्टर ईसाई सोनिया गाँधी, उनके ईसाई बेटी-बेटे, रिश्तेदार और ईसाई सलाहकार भारत को ईसाई लैंड बनाकर इसे पोप के चरणों में डाल देना चाहते हैं। इसके लिए ईसाई देश सारे भारत में 9 लाख गिरजाघर बनाना चाहते हैं। जबसे सोनिया गाँधी कांग्रेस प्रेसीडेंट बनी हैं तब से हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन बढ़ गया है। पर हिन्दू 'विश्व बंधुत्व' के कारण सारे संसार का कल्याण चाहते हैं। इससे उनमें देशबंधुत्व व धर्म बंधुत्व पैदा नहीं हो सकता और वे हजार साल गुलाम बने रहे और फिर गुलामी की ओर बढ़ रहे हैं।

ईसाई समाज का विकृत साम्राज्यवादी रूप

प्रसिद्ध लेखक व इतिहासकार मि. पितिरिम सोरोकिन कहते हैं कि "पिछली कुछ शताब्दियों में सबसे अधिक आक्रामक लड़ाकू, लुटेरे, लालची और सत्ता के मद में चूर यदि कोई है, तो वह है पाश्चत्य ईसाई जगत्। इन सैकड़ों वर्षों में उन्होंने सब महाद्वीपों पर आक्रमण किये। इनकी सेनाओं के पीछे पादरियों और व्यापारियों ने अधिकतर अन्य धर्मावलंबी देशों को अपना गुलाम बनाकर लूटा। उन्होंने अमेरिका, आस्ट्रेलिया और एशिया के करोड़ों भोले आदिवासियों को अपने अधीन

कर उनका अत्यंत निर्दयता से शोषण किया। उनकी संस्कृति, चरित्र, जीवन-पद्धति, जीवनमूल्य सब नष्ट कर दिए, ताकि उन्हें ईसाई बनाया जा सके।" आज भारत में पाश्चात्य संस्कृति यही कर रही है।

पाश्चात्य संस्कृति का विकृत रूप

दुनिया को धार्मिक अशांति, घृणा, अन्याय, आतंकवाद, उपनिवेशवाद, एटमबम, सेक्स का भयंकर दुराचार और एड्स जैसी बीमारियाँ तथा परिवारों में नैतिक पतन, फूट, स्वार्थ और माता-पिता का अपमान पश्चिमी ईसाई देशों की ही देन हैं। वहाँ प्रति मिनट बलात्कार और हत्याएँ हो रही हैं। 2 करोड़ बच्चे तलाक़ के बाद अपने पिता के बिना अनाथ हैं; क्योंकि ईसाई धर्म में कोई आत्मज्ञान, संयम व सच्चाई नहीं है। फिर भी सब मिशनरी, कार्डिनल और पोप झूठा दम भर रहे हैं कि सिर्फ प्रभु यीशू ही मानव जाति को बचा सकते हैं। प्रश्न यह है कि फिर वे यूरोप और अमेरिका को दुराचार से क्यों नहीं बचा पाये? ईसाई धर्म ग्रंथों के आदेशानुसार गिरजाघर ने ब्रेनों, गैल्यूलियो, वानिनी, वेटमेन जैसे कई प्रसिद्ध वैज्ञानिकों को जीवित जला दिया, सिर्फ इसलिए कि उनके वैज्ञानिक आविष्कार और खोज से बाईबिल के अंधविश्वास को ठेस पहुँच रही थी। स्पेन में 15वीं शताब्दी में धार्मिक अपराधों के लिए 11 हजार व्यक्तियों को जिंदा जला दिया गया। (ख्रिश्चियन रिसर्च इन इंडिया, ले. डॉ. क्राइर्डियस बुचानन)। गोवा में भी धर्म परिवर्तन के लिए सैकड़ों हिन्दुओं को इसी तरह जिन्दा जलाया गया अथवा उनके शरीर की सब हड्डियाँ तोड़ दी गईं। ऐसे पचासों अत्याचार किये गए।

इन पापों को छिपाने के लिए अब मिशनरियों ने सेवाकार्य शुरू किया है, पर अंदरूनी इरादा पुराना साम्राज्यवादी ही है। चर्च द्वारा प्रचारित ईसाई धर्म का यह रूप ईसाई धर्म के उन उपदेशों और भावनाओं से भिन्न है, जिनमें अहिंसा, क्षमा और धन

संग्रह न करने का उपदेश किया गया है।

निष्पक्ष ईसाई विद्वानों के ईसाई धर्म पर विचार

विश्वप्रसिद्ध विद्वान् टाल्सटाय लिखते हैं कि, विश्व के किसी भी धर्म ने इतनी वाहियात, अवैज्ञानिक, आपस में विरोधी और अनैतिक बातों का उपदेश नहीं दिया, जितना गिरजाघर ने दिया है। बर्नार्डशा के अनुसार, "बाइबिल पुराने और दकियानूसी अंधविश्वासों का एक बंडल है।" एच. जी. वेल्स के अनुसार, "दुनियाँ की सबसे बड़ी बुराई है रोमन कैथलिक चर्च"। प्रसिद्ध विद्वान् नीत्शे, ऐलिजाबेथ कैड़ी, हेलेन गार्डनर, जार्ज डब्लू फुट आदि ने भी ईसाई धर्म की घोर निंदा की है पर हिन्दू धर्म की विश्व के पचासों निष्पक्ष ईसाई विद्वानों ने अत्यधिक प्रशंसा की है। प्रसिद्ध विद्वान ऐनी बेसेन्ट कहती हैं कि "मैंने 40 वर्ष तक विश्व के सभी बड़े धर्मों का अध्ययन करके पाया है कि हिन्दू धर्म के समान पूर्ण, महान और वैज्ञानिक धर्म कोई नहीं है।" स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि "यदि विश्व से हिन्दू धर्म नष्ट हो गया तो सत्य, न्याय, मानवता और शांति सभी खत्म हो जायेगा।" अतः कई निष्पक्ष ईसाई विद्वानों ने हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन का विरोध किया ये राष्ट्रवादी ईसाई हमारे भाई हैं। उनके पूर्वज सब हिन्दू ही थे उनसे हिन्दुओं का कोई विरोध नहीं।

लोभ, छल, बल और कपट द्वारा धर्मपरिवर्तन

1. गरीबों, बीमारों, लाचारों को गिरजाघर कर्ज देते हैं, और उसे न चुका पाने पर उन्हें ईसाई बना लेते हैं।
2. मिशनरी स्कूलों में बच्चों में ईसाई धर्म के प्रति श्रद्धा और हिन्दू धर्म के प्रति उपेक्षा का भाव उत्पन्न किया जाता है, इससे वे भविष्य में हिन्दू समाज के विरोधी बन जाते हैं।
3. पादरी के छूने से अंधे को दिखने लगा या बीमारी दूर हो गई, ऐसे झूठे नाटकों द्वारा भोले आदिवासियों को ईसाई बनाया जाता है। वे यूरोप, अमेरिका में क्यों अंधों को ठीक नहीं करते।

4. ईसाई लड़कियाँ हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन कराने के लिए उनसे शादी कर लेती है। कई पादरी हिन्दू साधुओं की तरह हिन्दू नाम रखकर भगवा वस्त्र पहन कर चर्च में आरती और फूलों से ईसामसीह की पूजा करते हैं और धोखे से भोले अज्ञानी हिन्दुओं को ईसाई बना लेते हैं। हिप्नोटिज्म, बल प्रयोग और अत्याचार इत्यादि के द्वारा भी उनका धर्म परिवर्तन किया जाता है। चर्च की सारे विश्व को ईसाई बनाने की अत्यंत बृहद् और गुप्त योजना 'मिशन मेंडेट' और 'आपरेशन वर्ल्ड' नामक ग्रंथों में दी गई है। इसके लिए विश्व में चर्च के पासः-

1. 41 लाख पूर्णकालीन प्रचारक व पादरी (2) 65 करोड़ रुपये का वार्षिक बजट (3) 1800 प्राइवेट टी. वी. और रेडियो स्टेशन जैसे पचासों साधन हैं (वर्ल्ड ख्रिश्चियन इन्साइक्लोपीडिया) इससे निम्नलिखित कार्य हो रहा है:-

1. भारत में 1 लाख नये प्रचारक तैयार करना (2) प्रत्येक गाँव में एक गिरजाघर बनाना। (3) उत्तर भारत में 10 करोड़ लोगों तक बाइबल पहुँचाना। इन कार्यों के लिए हजारों करोड़ रुपया विदेशों से आ रहा है।

इस योजना के अंतर्गत 1971 से 1981 के बीच में अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सियांग क्षेत्र में ईसाई आबादी 106 प्रतिशत बढ़ी। (आर्गनाईजर 27-9-1998) 3 और 9 फरवरी 1999 के आब्जर्वर के अनुसार ईसाई मिशनरी अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली की झोंपड़पट्टियों में रहने वाले लाखों लोगों तथा करोड़ों बंगालियों को शीघ्र ही ईसाई बनाने की योजना पर तेजी से कार्य कर रहे हैं। यद्यपि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार संविधान में सिर्फ धर्म प्रचार की स्वतंत्रता दी गई है, धर्म परिवर्तन की नहीं, पर हिन्दुओं की लापरवाही, स्वार्थपरता और फूट के कारण ईसाई इस कार्य में सफल हो रहे हैं। "किन्तु पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका,

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में 16,50,000 व्यक्ति प्रतिवर्ष ईसाई धर्म को सारहीन, अवैज्ञानिक और निरर्थक समझकर छोड़ रहे हैं। (ईसाइयत और पाप का आगमन, ले. श्री हो. वे. शेषाद्री)

ईसाई धर्म और हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म का आधार, मानवता, न्याय, संयम, सत्यता, 'सर्वधर्म समभाव', वसुधैव कुटुंबकम्' और 'अहिंसा परमोधर्मः' है। हिन्दू देवता राम और कृष्ण सुख और आनंद की दिव्य अनुभूति देते हैं, जबकि ईसाई धर्म का आधार क्रास पर लटके हुए प्रभु यीशू के शव को पूजना है। शव का पूजन मनुष्य की मन, बुद्धि और आत्मा को विकृत कर देता है। इससे मानसिक शांति नहीं मिलती। परिणामस्वरूप विदेशी ईसाई लोग अपना धर्म छोड़कर नशीली दवाओं, भौतिक वस्तुओं व सैक्स के दुराचार द्वारा इन्द्रियों का सुख प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, उनका पारिवारिक जीवन नष्ट हो गया है, जबकि हिन्दुओं का पारिवारिक जीवन सच्चरित्रता के कारण विश्व में सर्वश्रेष्ठ व सबसे सुखी है।

गीता में लिखा है कि अपने धर्म की रक्षा के लिए प्राण भी दे देने चाहिए। दूसरों का धर्म बहुत भयावह और नरक का द्वार होता हैं। गीता में नरक के तीन द्वार बतलाये गये हैं- काम, क्रोध और लोभ, पर ईसाई देशों ने इन तीनों पापों को सारे विश्व में बढ़ाया है। वे विदेशों में सेक्स टूर निकालते हैं, जो टूरिस्टों को एशिया, दक्षिण अमेरिका व अफ्रीका के गरीब देशों में ले जाकर छोटी बालिकाओं के साथ दुराचार करवाते हैं और एड्स फैलाते हैं, क्योंकि ईसाई धर्म मनुष्य को पाप की संतान मानता है, जबकि हिन्दू धर्म उसे अमृत की संतान मानता है।

मिशनरियों का झूठा प्रचार

रक्षामंत्री ने लोकसभा में भाषण दिया कि, मिशनरियों ने सारी दुनिया में शोर मचा रखा है कि भाजपा सरकार के कारण

गुजरात, झाबुआ और उड़ीसा में ईसाइयों पर बहुत अत्याचार हो रहा है, पर जब निष्पक्ष जाँच करवाई गई तब मालूम पड़ा कि झाबुआ में नन्स पर बलात्कार करने वाले आधे लोग ईसाई ही थे। ऐसे पचीसों झूठे प्रचार व हिन्दुओं के विरुद्ध षड्यंत्र मिशनरी कुछ बिकाऊ प्रेस को अपने साथ लेकर कर रहे हैं पर बधवा कमीशन ने स्पष्ट निर्णय दिया है कि पादरी स्टेन्स की हत्या में विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल का कोई भी हाथ नहीं था।

आबजर्वर के अनुसार सच्चाई तो यह है कि गुजरात के गढ़वी गाँव में ईसाई युवकों ने हनुमान जी की मूर्ति पर पेशाब किया और झाड़मोड़ गाँव में हनुमान जी की मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े कर दिए ताकि आदिवासियों का विश्वास हनुमान जी पर से उठ जाये और वे ईसा की पूजा करने लगें, ऐसे अत्याचारों के कारण आदिवासी लोग कभी-कभी ईसाइयों पर आक्रमण कर देते हैं।

हिन्दू क्या करें

(1) हमें अपने धर्म का प्रचार, तथा सेवा के लिए धन देना, सीखना चाहिये। (2) द्वारिकापीठ तथा टौंगेरी के शंकराचार्यों के अनुसार अस्पृश्यता हिन्दू धर्म के विरुद्ध है और दलितों व दुखियों की सेवा व उत्थान करना व उन पर दया करना प्रत्येक हिंदू का प्रथम धर्म है। (3) विश्व हिन्दू परिषद व संघ के सेवा कार्यों से प्रभावित होकर हजारों धर्मांतरित ईसाई पुनः अपने हिन्दू धर्म में वापिस आ रहे हैं अतः उन्हें आदर सहित तन, मन, धन से मदद देनी चाहिए।

(4) हिंदुओं और उनके धर्माचार्यों को विदेशी शक्तियों के षड्यंत्र से सावधान होकर धर्मपरिवर्तन बंद करवाने के लिए आंदोलन, प्रचार और धन संग्रह करना चाहिये।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की ऐतिहासिकता
(संक्षिप्त रूप)

–डॉ. सत्यपाल सिंह, पुलिस कमिश्नर

भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास में हजारों वर्षों से जिन महापुरुषों के चरित्र ने जनमानस को हृदय की गहराइयों तक प्रभावित किया है उनमें श्री राम का नाम मुख्य है। उनका युग चक्रवर्ती सम्राटों व साम्राज्यों का था। यह वह जमाना था जिसके बारे में बाइबल (जेनीसिस 11. 1) में लिखा है कि सारे संसार में एक ही भाषा व वाणी थी। उस समय हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि धर्म/मत नहीं थे और न ही आज के समान जाति आधारित सामाजिक दीवारें। तब मनुष्य समाज के दो ही भाग थे आर्य व अनार्य। जो चरित्रवान व विद्वान् न था वही अनार्य था। तब सारी मानव जाति की एक ही संस्कृति थी।

साहित्य शोध : भगवान् राम के बारे में अधिकारिक रूप में जानने का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण है। इस गौरव ग्रन्थ के कारण वाल्मीकि दुनिया के आदि कवि माने जाते हैं।

दूसरी अनेक भारतीय भाषाओं में भी रामकथा लिखी गई है। हिन्दी में कम से कम 11, मराठी में 8, बंगला में 25, तमिल में 12, तेलुगु में 5, तथा उड़िया में 6, रामायणें मिलती हैं। हिन्दी में लिखित गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' ने उत्तर भारत में विशेष स्थान पाया है। इसके अतिरिक्त भी संस्कृत, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, उर्दू, अरबी, फारसी, आदि भाषाओं में रामकथा लिखी गई है। विदेशों में भी तिब्बती रामायण, तुर्किस्तान की खेतानी रामायण, इंडोनेशिया की ककबिन रामायण, इण्डोचायना की रामकेर्ति, (रामकीर्ति), खमैर रामायण, बर्मा (म्याँमार) की

यूतो की रामायागन, थाईलैण्ड की रामकियेन आदि रामचरित का बखूबी बखान करती है। इसके अलावा विद्वानों का ऐसा भी मानना है कि ग्रीस के कवि होमर का प्राचीन काव्य 'इलियड', रोम के कवि नोनस की कृति 'डायोनीशिया' तथा रामायण की कथा में अद्‌भुत समानता है। विश्व साहित्य में इतने विशाल एवं विस्तृत रूप से विभिन्न कवियों/लेखकों द्वारा राम के अलावा किसी और चरित्र का इतनी श्रद्धा से वर्णन नहीं किया गया।

मन्दिर व मृण्मूर्तियाँ–देश–विदेशों में भगवान राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, आदि के सैकड़ों नहीं- हजारों मन्दिरों का निर्माण किया गया। कम्बोडिया के विश्व प्रसिद्ध 11वीं शताब्दी में निर्मित, अंकोरवाट मन्दिर की दीवारों पर रामायण व महाभारत के दृश्य अंकित हैं। इसी तरह से 9वीं सदी में निर्मित जावा के परमबनन (परमब्रह्म) नामक विशाल शिवमन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण की चित्रावली अंकित है। इनमें मुख्य हैं राम, सीता, लक्ष्मण का पंचवटी गमन, मारीच मृग, त्रिशिरा राक्षस द्वारा खर–दूषण से विचार–विमर्श और राम द्वारा 14 राक्षसों के वध का वर्णन, रावण द्वारा सीताहरण, सुग्रीव आदि द्वारा सीता को आभूषण फैंकते देखना, सुग्रीव द्वारा राम का स्वागत, सुग्रीव–बाली युद्ध, श्रीराम का बाली वध, हनुमान द्वारा अशोक वाटिका को नष्ट किया जाना, रावण पुत्र इन्द्रजीत का युद्ध में जाना, आदि दृश्य हैं। दिल्ली के सफदरजंग मदरसे में रामायण के चित्र अंकित है। मध्य भारत के धार तथा रतलाम राज्य की मुद्राओं पर हनुमान अंकित हैं। सन्तों द्वारा प्रचलित पीपल की मुद्राओं पर राम आदि चारों भाई, सीता तथा हनुमान को दिखाया गया है।

इतने विस्तृत साहित्य तथा पुरातात्विक प्रमाणों के बावजूद भी

भगवान राम को ऐतिहासिक पुरुष न माना जाए तो इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है।

श्रीराम का काल - प्राचीन भारतीय कालगणना तथा पुराणीय परम्परा के अनुसार श्रीराम 24वें त्रेता युग में पैदा हुए। वाल्मीकि रामायण तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों में राम, रावण आदि के विषय में चार मुख्य सन्दर्भ मिलते हैं।

1. त्रेता युगे चतुर्विंशे रावणः तपसः क्षयात्।
   रामं दाशरथिं प्राप्य रावणः क्षयमीयीवान्।।
   (वायु पुराण 70.88)
2. संघौ तु समनुप्राप्ते त्रैतायां द्वापरस्य च।
   रामो दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पति।।
   (महाभारत 348.16)
3. चतुर्विंश युगे चापि विश्वामित्र पुरःसरः।
   लोके राम इति ख्यातः तेजसा भास्करोपमः।।
   (हरिवंश 22.104)
4. चतुर्विंशे युगे वत्स! त्रेतायां रघुवंशजः।
   रामो नाम भविष्यामि चतुर्व्यूहः सनातनः।।
   (ब्रह्माण्ड पुराण 2.2.36.30)

उपरोक्त संदर्भों व प्रमाणों के आधार पर यह ही सत्य मालूम होता है कि श्रीराम, रावण, विश्वामित्र आदि युग पुरुष 28वें त्रेतायुग में थे। महाभारत के अनुसार श्रीराम त्रेता एवं द्वापर युगों के संधिकाल में हुए थे। यहाँ 24वें किवाँ दूसरे त्रेता का वर्णन नहीं हैं।

ऊपर लिखे प्रमाणों के आधार पर हम अगर 24वें त्रेता की समाप्ति पर राम का काल मानें तो युगों की गणना के हिसाब से 8,66,108 वर्ष ठहरता है।

इतने लम्बे काल के बाद किसी भी भवन, मूर्ति, मुद्रा,

हथियार आदि का अस्तित्व रह नहीं सकता। प्रत्येक मनुष्य के अस्तित्व के लिए प्रमाण दिए भी नहीं जा सकते। 4-5 पीढ़ियाँ पूर्व अगर कोई बिना सन्तान के मर जाए तो उसको सिद्ध करने के लिए हमारे पास कोई प्राकृतिक वस्तु नहीं मिलेगी।

पिछले कुछ वर्षों में कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाले कुछ अति उत्साही लोगों ने वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड 9. 98--6) में वर्णित श्री राम के जन्म समय (चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न आदि की) 'प्लेनेटेरियम गोल्ड सॉफ्टवेयर' के माध्यम से आधुनिक गणना की है। इन लोगों ने ग्रहों-नक्षत्रों आदि की स्थिति का अध्ययन करते हुए परिणाम निकाला कि श्रीराम का जन्म 10 जनवरी 5114ई. पूर्व (अर्थात् आज से 7129 वर्ष पूर्व) हुआ था। ये लोग जहाँ साधुवाद के पात्र हैं, वहाँ हमें यह भी याद रखना चाहिए कि गणित ज्योतिष की अनभिज्ञता के कारण उनका यह परिणाम ठीक नहीं। गणित ज्योतिष के हिसाब से लगभग 26000 वर्षों में राशियाँ अपना एक चक्र पूरा कर लेती हैं। अर्थात् एक राशि का चक्र अपने पूर्ववत् स्थान पर आने के लिए लगभग 26000 वर्ष लेता है।

इसीलिए राम सिर्फ 7129 वर्ष पूर्व ही जन्मे, उससे 26000 वर्ष पूर्व नहीं यह किस आधार पर कहा जा सकता है? पहले दिए गए वायु पुराण व महाभारत के प्रमाणों के आधार पर यदि हम श्रीराम का जन्म 25वें त्रेता (वर्तमान चतुर्युगी) में माने तो तब से राशि चक्र आकाश में 33 चक्कर लगा चुका है व 34वें त्रेता का आधार लेते हैं तो तब से लेकर आज तक 668 राशिचक्र पूरे हो चुके हैं और 699वाँ चक्र अभी चल रहा है।

शेष अगले अंक में......

नवरात्र से जीवन में समरसता और स्वास्थ्य

-श्री सीताराम गुप्त

होली और रंगोत्सव की समाप्ति के साथ ही नए साल के पहले महीने अर्थात् चैत्र मास का शुभारंभ हो जाता है। लेकिन चैत्र मास की शुरुआत से नववर्ष की शुरुआत नहीं होती। नववर्ष का शुभारंभ होता है इसके एक पक्ष के बाद अर्थात् चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से। और नववर्ष के प्रारंभ के साथ ही शुरुआत हो जाती है वसंतकालीन नवरात्र महोत्सव की।

चैत्र मास में ही नहीं, आश्विन मास में भी नवरात्र महोत्सव का आयोजन होता है, उसे शारदीय नवरात्र कहते हैं, जो आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से आरंभ होता है। नवरात्रों का आयोजन चैत्र तथा आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में ही क्यों किया जाता है?

चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की समाप्ति के साथ ही परिवेश में एक परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता है। इस परिवर्तन के कई स्तर और रूप हैं। पहला परिवर्तन है ऋतु परिवर्तन। इसीलिए नवरात्रों का आयोजन भी वर्ष में दो बार किया जाता है-एक वसंतकालीन नवरात्र तथा दूसरा शरतकालीन नवरात्र। वसंत और शरद-दोनों ही विषम ऋतुओं के मध्य संधिकाल के सूचक हैं। यदि इन्हें भी अलग ऋतुओं की तरह देखें तो, वसंत ऋतु का आगमन सर्दी और गर्मी के मध्य तथा शरद ऋतु का आगमन बरसात और सर्दी के मध्य होता है।

ऋतुओं के संधिकाल में नवरात्रों का आयोजन वास्तव में मनुष्य के बाह्य और आंतरिक परिवर्तन में संतुलन स्थापित करना है। जिस प्रकार बाह्य जगत में परिवर्तन व्याप्त है, उसी प्रकार मनुष्य के अन्तर्जगत में भी परिवर्तन व्याप्त है। इस आयोजन का उद्देश्य ही मनुष्य के अंतर्जगत में सही परिवर्तन को अनुकूल बनाकर उसे संतुलन प्रदान करना है। मनुष्य के लिए बाह्य परिवर्तन को स्वीकार करना अनिवार्य है। बाह्य

परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए आंतरिक परिवर्तन अनिवार्य है। यदि मनुष्य के मनोभावों में अपेक्षित परिवर्तन हो जाता है, तो उसकी स्वीकार्यता बढ़ जाती है।

नवरात्रों के दौरान किए जाने वाले अनुष्ठान, पूजा, अर्चना आदि पर्यावरण की शुद्धि के साथ-साथ मनुष्य की शरीर शुद्धि और भाव शुद्धि करने में भी सक्षम है। आप नवरात्र के समय किए जाने वाले फलाहार या उपवास व्रत को ही लीजिए। यह शरीर शुद्धि का पारंपरिक तरीका है जो प्राकृतिक चिकित्सा का भी एक अनिवार्य तत्व है। सभी धर्मों में इसीलिए तो व्रत का भी यही उद्देश्य है कि उसके द्वारा सबसे पहले मनुष्य शरीर की शुद्धि करे। शरीर की शुद्धि के बिना मन की शुद्धि अर्थात् भावशुद्धि संभव नहीं।

नवरात्रों का आयोजन हमेशा मास के शुक्ल पक्ष में ही होता है, क्योंकि कृष्ण पक्ष बढ़ते अंधकार और अज्ञान का प्रतीक है और शुक्ल पक्ष घटते अंधकार, अज्ञान तथा बढ़ते प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक। वेदों में प्रार्थना की गई है:

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतम् गमय।

शुक्ल पक्ष में नवरात्रों का आयोजन इस तथ्य का प्रतीक है कि हम निरंतर असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर अग्रसर हों। अपने मनोभावों को सकारात्मकता प्रदान करें, क्योंकि सकारात्मकता के अभाव में असत्य, तमस् और मृत्यु से पार पाना असंभव है। नवरात्रों के आयोजन का एक और पक्ष भी है। इसमें पूजा का अर्थ है आसुरी वृत्तियों अर्थात् नकारात्मक भावों का उन्मूलन। यदि हम ऐसा नही कर पाते, तो नवरात्रों का आयोजन निरर्थक है।

ॐ

आचार्य शंकर एवं मूलशंकर

-स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

प्राच्य ही नहीं, अपितु पाश्चात्य ऐतिहासिक नभमण्डल में भी दो प्रकाशपुंजों की चर्चा प्रायः विश्व के सभी मनीषियों के द्वारा किसी न किसी रूप में होती रहती है। ये दोनों लोक में आचार्य शंकर और मूलशंकर (दयानन्द) के नाम से जाने जाते हैं। इसमें मुख्य कारण है कि दोनों ही संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान् एवं गुरुभक्त थे। वे केवल अध्यात्म साधना के शिखर पुरुष ही नहीं, अपितु वेदों के भी ज्ञाता एवं व्याख्याता थे। दोनों शंकरों में सर्वाधिक साम्य यह था कि इन दोनों के ही समय में वैदिक मान्यताओं, एवं परम्पराओं पर प्रतिपक्षियों द्वारा भयंकर कुठाराघात किया जा रहा था। एक के समय में वेद मूर्खतापूर्ण कर्मकाण्डों के जगडवाल कहे जाते थे, दूसरे के समय में वेद गड़रियों के गीत सम्बोधित किये जाते थे। जिसके कारण राष्ट्रीय अस्मिता भी ध्वस्त हो रही थी। इसलिए इन दोनों के ही विचारों में वैदिक धर्म का उद्धार करना अत्यन्त आवश्यक था। इसलिए उन दोनों ही अप्रतिम महापुरुषों का विचार-केन्द्र वेदों का उद्धार कर, पुनः वैदिक धर्म की प्रतिष्ठापना का दृढ़ संकल्प था।

वैदिक धर्म के उद्धार की उत्कृष्ट अभिलाषा ने ही इन दोनों को अपना सर्वस्व समर्पण कर उनके उद्धार हेतु कार्य क्षेत्र में उतरने के लिये सम्प्रेरित किया। दोनों ही बाल ब्रह्मचारी एवं संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् थे। जहाँ आचार्य शंकर अपनी अद्‌भुत प्रतिभा, ऊहा, विलक्षण स्वसिद्धान्त के प्रतिपादक, महायोद्धा एवं महामनीषी के रूप में जाने-माने एवं पहचाने जाते हैं, उसी प्रकार मूलशंकर भी आचार्य शंकर के समकक्ष कहे जाते हैं। अनेक पाश्चात्य तथा पौरस्त्य विद्वानों ने तो मूलशंकर के सम्बन्ध में यहाँ तक लिखा है कि आचार्य शंकर के बाद मूलशंकर (दयानन्द) ही इस धराधाम पर संस्कृत के उद्भट विद्वान् हुए। संस्कृत के एक कवि ने तो ऋषि दयानन्द का बाल्य जीवन लिखते समय यहाँ तक लिखा है कि-

भूयोऽपि भूत्वा बटुरेष नूनं श्री शंकराचार्य इहागतो नु।।
आम्नाय धर्मोद्धरणाय लोकैरित्यन्वमानि व्रतिनं विलोक्य।।

(दयानन्द दिग्विजय-4/14)।

दोनों ही परदुःख कातर एवं निर्भीक सिद्ध योगी थे। दोनों के ही विचारों के उत्स वेद थे और दोनों ही वेद को परम-प्रमाण मानते थे। परन्तु बाह्य रूप से दोनों के विचारों में स्पष्ट रूप से भेद परिलक्षित होता है। एक अद्वैतवादी अर्थात् अद्वैतवाद के पोषक थे और दूसरे त्रेतावादी अर्थात् त्रेतवाद के पोषक। ये ही इन दोनों महापुरुषों में मौलिक भेद थे। पुनरपि मूलशंकर आचार्य शंकर को वेद मार्ग एवं वर्णाश्रम धर्म के मानने वाले मानते थे तथा उन्हें वेदविरुद्ध मतों के खण्डन एवं उनके अपसारण में महान् उद्योगी समझते थे, जिनके ग्रन्थों में अद्वैतवाद की प्रतिष्ठापना वेदान्त भाष्य में जो यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगोचर होती ही है। इसके अतिरिक्त उनके उपनिषद्भाष्य तथा गीताभाष्य भी इन्हीं दृढ़ विचारों के पोषक तथा द्योतक हैं, पुनरपि एक त्रेतवादी आचार्य मूलशंकर (दयानन्द) ने अपने पूना प्रवचन में उनके पाण्डित्य, अद्भुत कार्यक्षमता, तार्किक प्रचंड ऊहा एवं वेद विरुद्ध मतवादियों की मूलोत्पाटक प्रतिभा की अत्यन्त प्रशंसा की है और विशेष रूप से आचार्य शंकर के अद्वैतवाद के पोषक उनके शारीरिक भाष्य (वेदान्त भाष्य) की प्रशंसा की है, जो आचार्य शंकर के अद्वैतवाद सिद्धान्त का अभेद्य दुर्ग माना एवं कहा जाता है। इतना ही नहीं, मूलशंकर ने तो उनके उस भाष्य को उनकी योग्यता की चरम कसौटी माना है। उनके इस भाष्य की प्रशंसा स्वयं आप मूलशंकर के शब्दों में पढ़े-

"शंकर स्वामी वेद मार्ग और वर्णाश्रम धर्म के मानने वाले थे। उनकी योग्यता कैसी उच्च थी, यह उनके बनाये 'शारीरिक भाष्य' से विदित होता है।

शंकर स्वामी के सामने जो अनेक पाखण्ड मत प्रचलित थे और जिनका कि उन्होंने खण्डन किया है, वह 'शंकर दिग्विजय' के निम्न श्लोक से प्रकट होता है-

शाक्तैः पाशुपतैरपि च क्षपणकैः कापालिकैर्वैष्णवैः
अप्यन्यैरखिलैः खिलं खलु खलैर्दुर्वादिभिर्वैदिकम्।

इससे अनुमान किया जा सकता है कि श्रीमान् शंकर स्वामी ने वेद विरुद्ध मत का कितना खण्डन किया है।" (पूना प्रवचन 12वां व्याख्यान)

'सत्यार्थ प्रकाश' में भी मूलशंकर (दयानन्द) ने आचार्य शंकर की विद्वता एवं कार्यपद्धति की भूरि-भूरि प्रशंसा की है, जिसका अवलोकन आप स्वयं मूलशंकर के शब्दों में करें- "बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़कर सोचने लगे कि अहह......। शंकराचार्य शास्त्र तो पढ़े ही थे......। उसमें शंकराचार्य का वेदमत एवं जैनियों का वेदविरुद्ध मत था। शरीरधारी जीव ब्रह्म नहीं है, क्योंकि ब्रह्म से जीव का भेद स्वरूप से सिद्ध है इत्यादि शारीरिक सूत्रों से भी स्वरूप से ब्रह्म और जीव का भेद सिद्ध है।"

(सत्यार्थ प्रकाश, ग्यारहवाँ समुल्लास)

आचार्य शंकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रशंसा मूलशंकर एवं आचार्य शंकर को किसी एक स्थल पर अवस्थापित करती है, जो सर्वथा गम्भीर रूप से विचारणीय है। मोक्ष के सम्बन्ध में भी दोनों आचार्यों का विचार सर्वथा समान है। यह दोनों समानता उनके विचार भेद को शीघ्र समाप्त कर देती है; क्योंकि वादों का समापन मुक्ति की समान अवस्था से स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। पहले मूलशंकर के ही विचारों को लीजिये-

ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे।

(मुण्डकोपनिषद् 3/2/3)

वे मुक्त जीव मुक्ति को प्राप्त होके ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोगके पुनः महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़के संसार में आते हैं। इसकी संख्या यह है कि तैंतालिस लाख, बीस सहस्र वर्षों की एक चतुर्युगी, दो सहस्र चतुर्युगियों का एक अहोरात्र, ऐसे तीस अहोरात्रों का एक महीना, ऐसे बारह महीनों

का एक वर्ष, ऐसे शत वर्षों का 'परान्तकाल' होता है। इसको गणित की रीति से यथावत् समझ लीजिए। इतना समय मुक्ति में सुख भोगने का है। **ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते।**

(छन्दोग्योपनिषद् 7/15) (सत्यार्थ प्रकाश, नवम समुल्लास) अब इसी विचार की समता हमें आचार्य शंकर के छान्दोग्योपनिषद् भाष्य में मिलती है-

अर्चिरादिना मार्गेण ब्रह्मलोकमभिसम्पद्य यावद् ब्रह्मलोकस्थितिः। तावत् तत्रैव तिष्ठति प्राक् ततो नावर्तत इत्यर्थः

(छान्दोग्योपनिषद् अ. 18, ख, 15)।

ऋषि दयानन्द भी यही कहते हैं कि महाप्रलय से पहले वह मुक्त जीव संसार में नहीं आता। यहाँ दोनों शंकरों की विचार समता से यह स्पष्ट हो गया कि ऋषि दयानन्द उनको अपना आदर्श क्यों मानते थे और उन्हें वेदमार्गी भी क्यों कहा है? ब्रह्मलीन आदि की व्याख्या भी आचार्य शंकर के इस वाक्य के परिप्रेक्ष्य में ही समझनी चाहिए। जैसे कोई किसी के सम्बन्ध में कहे कि वह अन्धकार में लीन हो गया, ठीक इसी प्रकार से उन्हें समझना चाहिए। पुराणादि के सम्बन्ध में भी आचार्य शंकर का दृष्टिकोण स्पष्ट है, क्योंकि उन्होंने किसी भी स्थल पर पुराण शब्द से वर्तमान अष्टादश पुराणों को ग्रहण नहीं किया है। इससे भी उनका दृष्टिकोण मूलशंकर (ऋषि दयानन्द) के समीप है। छोटे-मोटे क्रियाकलापों और विचारभेदों की यहाँ चर्चा अनावश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि मूल तो अद्वैत और त्रैत ही है।

आचार्य शंकर की ब्रह्मलोकः की व्याख्या भी-**साधकानां बहुत्वाद् एकोऽप्यनेकवद् दृश्यते प्राप्यते च।** जो ब्रह्मलोक अर्थात् दर्शनीय परमात्मा में स्थित होकर मोक्ष सुख भोगते हैं, मूलशंकर की व्याख्या के तुल्य है। यह विचार-साम्य ही मूलशंकर को व आचार्य शंकर को वेदमार्गी कहने के लिये प्रेरित करता है।

गुरुकुल, प्रभात आश्रम, भोलाझाल टीकरी, मेरठ

Some Facts about the Ram Setu row

-Ankit Grover

1. The UPA Government announced the launch of the Sethusamudram Shipping Channel Project (SCCP) in 2005 to create a shipping channel between the Palk Bay and the Gulf on Mannar between India and Sri Lanka.

2. The project would include dredging across the Ram Setu or Adam's Bridge, believed by Hindus to be a bridge built by Lord Ram to journey to Lanka. This bridge is said to be one of the most important religious sites for Hindus, and plays a significant role in the Ramayana.

3. The Supreme Court had, in 2007, restrained the UPA Government from going ahead with the project, and suggested that the Government examine an alternative route that does not dredge the Ram Setu.

4. The shipping channel is proposed to be 30 metres wide, 12 metres deep and 167 kilometres long.

5. Janata Party President Subramaniam Swamy had called for the Ram Setu to be conferred the status of national monument. Swamy also contended that the demolition of Ram Setu will amount to a criminal offence under section 295 IPC.

6. The Sethusamudram project drew the ire of Hindus across the country, who see it as a disrespect to Hindu religious beliefs.

7. Following national outrage over the project, Hindu groups formed the 'Save Ram Sethu' campaign in 2007 to create awareness, and to stop the Government from continuing the project.

8. The Sethusamudram project has also drawn widespread opposition from environmental activists, who argue that it will cause a great deal of damage to local habitation and marine life.

9. Besides environmental hazards, the SCCP was found to be economically unviable, as suggested by a report prepared by environmentalist RK Pachauri. The recommendation was rejected by the Government.

10. The BJP has warned the UPA Government against the demolition of Ram Setu, and said that it will not tolerate any tampering with the historical bridge.

Evidence from Malaysia about Rama and Ramasetu

-Kalyanaraman

There is an engraving showing the building of Ramasetu on Angkor Wat Vishnu temple in Malaysia and following facts support the evidence for Rama or Ramasetu:

1. In Malaysia Malaysia gazette notifications refer to seri paduka: http://search.library.wisc.edu/catalog/ocm02242962 Warta kerajaan Seri Paduka Baginda

2. 'Kebawah Duli Yang Maha Mulia Paduka Seri Baginda Sultan' is the official title of the Sultan of Brunei. The present Sultan's official name (with full title) is "Kebawah Duli Yang Maha Mulia Paduka Seri Baginda Sultan Haji Hassanal Bolkiah Muizzaddin Waddaulah, Sultan dan Yang Di-Pertuan Negara Brunei Darussalam". In Malaysia, since 1993, the full title of the President of Malaysian Federation has been, Seri Paduka Baginda Yang di-Pertuan Agong (His Conqueror Majesty The Supreme Lord of the Federation). The President of Malaysia (who is elected from among the nine sultans) takes oath of office and secrecy in the name of 'Seri Paduka Dhuli'.

Do you know what seri paduka dhuli means and where it comes from? It means: the dust of Rama's Paduka (or sandals).

This is a memory recollected from Bharata's coronation of Rama Paduka during Rama's exiled life in the forests. Bharatam janam is the phrase used by Vishwamitra in Rigveda to refer to the people of Bharata. Bharata is the younger brother of Rama in Valmiki Ramayana.

Do you need any greater truth than this history which is all around us remembering Rama? Setubandha (Ramasetu) is adored on sculptures of Angkorwat Vishnu temple.

Brahmacharya is Pure Bliss

Once Commenting on Maharshi Dayanand, Gandhi Said :
"The Brahmacharya of Swami Dayanand is
My Envy and Despair"

-M. K. Gandhi

It is not easy to write on the subject of brahmacharya. But my own experience is so wide that I always wish to give some of it to the reader. The full and correct meaning of brahmacharya is search for the Brahmn. As the Brahmn is immanent is everyone. it can be known through contemplation and the inner illumination resulting from it. This illumination is not possible without complete control over the senses. Hence, brahmacharya means control in thought, speech and action of all senses, at all places and at all times.

Control Your Thoughts

The man who observes such perfect brahmacharya is totally free from disease and, therefore, he lives ever in the presence of God, is like God. I have no doubt that complete observance of such brahmacharya in thought, speech and action is possible. I regret to say that I have not attained to the state of such perfect brahmacharya. I am striving every moment to reach it. I have not given up the hope of attaining that state in this very life. I have acquired control over my body. I can guard myself during the walking state. I have yet to gain good enough control over my thoughts.

When I begin to think about a certain matter, I may have thoughts about other matters too, resulting in a constant clashing of thoughts. Even so, in my waking moments I am able to stop such clash of thoughts. I have attained a state in which ugly thoughts at any rate do not trouble me. But I have less control over my thoughts during sleep. In that state, all manner of thoughts come to me, even strange dreams, and sometimes desire for indulgences familiar to the body also wakes up in me........ This condition is possible only in a life troubled by desire. The disturbances in my thoughts are becoming

weaker, but I have not ceased altogether. Had I acquired complete mastery over my thoughts, I would not have been, during the last 10 years, afflicted with the three diseases of pleurisy, dysentery and appendicitis.

I believe that the body encasing a healthy Atman is bound to be healthy. Hence, as the atman becomes healthier— is less and less troubled by desire—the body too becomes healthier body is necessarily a strong body. It is only in a lean body that a strong atman lives. As the atman grows in strength, the body becomes leaner. A perfectly healthy body usually suffers from some disease. Even if it has no disease, it is quick to catch infection or contract a disease, whereas a perfectly healthy body will never catch an infection. Pure blood has the property of keeping off destructive germs of infection.

Such a wonderful state is certainly difficult to attain. Else I would have reached it, for, as my atman testifies, I would not be remiss in taking all measures necessary for attaining it. There is nothing in this world which can keep me from striving for everyone to undo the accumulated effects of his past. Despite this delay, however, I have not been in the least disheartened, for I am able to visualise the desireless state, am able to glimpse it faintly and the progress I have made makes my hopeful rather than otherwise.

Delay Doesn't Matter

Moreover, even if I die without realising my hope, I do not believe striving. I am as certain of rebirth as that this body exists. I am sure, therefore, that even a modest effort does not go in vain.

I have given this account of my experiences only in order that people in the same position may have patience and self-confidence. All have the same atman. The power of the atman is the same in all. Only, it has been manifested in some and in others it is still to be manifested. They too, if they try, will have like experiences. (Courtesy: The Collected Works Of Mahatma Gandhi, Vol. 28, Publication Division, GOI)

Was Einstein a Believer?

Regardless, he realised the illusory nature of existence

writes *-Mukul Sharma*

Poor Albert. So great is his stature that those who believe in a divine creator as well as those who don't, desperately want him on their side to bolster their respective convictions. As a result, both sides end up quoting him—often completely and conveniently out of context. They can't really be blamed though because the problem with Einstein was that, as far as quotable quotes on this subject were concerned, the man was prolific. Of course, that also may be because he wasn't sure what to believe.

Much-Quoted Man

For instance, two of the most famous believers' quotes are of him saying, "God doesn't play dice with the universe" and "The Lord may be cunning but he's not malicious". It's quite obvious from the utterances that no matter what the great physicist might have thought about God's subsequent behaviour, he was unequivocal about His prior existence.

Not-believers on the other hand quote from his Autobiographical Notes where he clearly states how and when he lost his faith: "...... I came — though the child of entirely irreligious (Jewish) parents — to a deep religiousness, which, however, reached an abrupt end at the age of 12". A "sceptical attitude" he goes on to write a little later "that has never again left me". Now that's pretty unequivocal too considering it was written in 1949 when he was 70, just five years before he died.

Atheist or Pantheist

What are we to make of this? Unfortunately, not much and Einstein's no help either—especially since throughout his life he kept labelling himself variously as an "agnostic", "religious non-believer" and "not an atheist or pantheist". Also, an extended identification he seems to have favoured was: "I believe in Spinoza's God who reveals himself in the orderly harmony of what exists. "This can be easily rephrased into "I

believe in the orderly harmony of what exists" without changing or adding to the meaning whatsoever. Is that what Einstein really believed in them? Apparently, yes. In 1997. Skeptic, a hard unbelief science magazine published for the first time a series of letters Einstein exchanged in 1945 with a junior officer in the US navy named Guy Raner on the same topic. Raner wanted to know if it was true that Einstein converted from atheism to theism when he was confronted by a Jesuit priest with the argument that a design demands a designer and since the universe is a design there must be a designer.

An Attitude Of Humility

Einstein wrote back that he had never talked to a Jesuit priest in his life but that from the viewpoint of such a person, he was and would always be an atheist. He added it was misleading to use anthropomorphical concepts in dealing with things outside the human sphere and that we had to admire in humility the beautiful harmony of the structure of this world—as far as we could grasp it. But Raner persisted. "Are you from the viewpoint of the dictionary," he wrote back, "an atheist; one who disbelieves in the existence of a God, or a Supreme Being?" To this Einstein replied: "You may call me an agnostic, but I do not share the crusading spirit of the professional atheist whose fervour is mostly due to a painful act of liberation from the fetters of religious indoctrination received in youth. I prefer an attitude of humility corresponding to the weakness of our intellectual understanding of nature and of our own being."

Mystical Faith

Many people now think that Einstein's faith was a mystical one—an emotional, poetic conviction of the presence of a superior reasoning power revealed by the universe. Yet, at the very end of his life, he became more convinced that otherwise. When a friend died, he wrote to his family: "He has departed from this strange world a little ahead of me. That means nothing. For us believing physicists, the distinction between past, present and future is only a stubborn illusion. "Krishna couldn't have put it better.

युवा–बम

–डॉ. रामदेव प्रसाद सिंह 'देव"

बोध सम्यक् दिशा का कराए बिना
इस युवा शक्ति को यूँ न सहकाइए।
हर तरफ खुद ही बहकी जो हद से अरे!
उसको और अधिक यूँ न बहकाइए।।

मूल्य की कब्र पर फूस का घर बना
खुद से चिनगारियाँ यूँ न लहकाइए।
कुछ भी करना हो गर इस धरा पर इधर
पहले आदर्श सुस्पर्श करवाइए।।

नीतिधर्मादि ग्रन्थों के स्वाध्याय को
सारी शिक्षा का आधार बनवाइए।
सूक्तियाँ शास्त्र की पाठ्यक्रम से जुड़ें
ऐसी शिक्षा सुपद्धति को चलवाइए।।

रामकृष्ण–विवेक के सन्मार्ग पर
सबको चलने का अभ्यास करवाइए।
वरना ज्वालामुखी पर जहाँ जो खड़ा
यूँ युवा–बम न विस्फोट करवाइए।।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF DONATION OF Rs. 1000/- (One Thousand Only) from Shri N.S. Negi Noida (UP).

Donations to the foundation are eligible for Tax exemption under section 80G of the I.T. Act. 1961 Vide No. DIT (E) 1/3313/DELBE21670-2503210 Dated 25.03.2010

RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2011-2013

देवो देवानामसि मित्रो ना अद्‌भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव प्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयंतव।।

(ऋ. /6/32/3)

ऋषिः कुत्स आंगिरसः, देवता–अग्निः, छन्द–जगती

हे मनुष्यो! हम कैसे परमात्मा की स्तुति करें? उसका वर्णन किया है। अग्ने परमेश्वर! आप 'देवानां देवो' (परम विद्वानों) के भी देव हैं तथा उन्हें परम आनन्द देने वाले हैं। और 'अद्‌भुतः' अद्‌भुत मित्र हैं व सबको सुख देने वाले सखा हैं। 'वसूनां वसुः असि' पृथिवी आदि वसुओं के भी वास कराने वाले हैं तथा 'अध्वरे' ज्ञानादि यज्ञ में 'चारुः' शोभा देने वाले हैं। हे प्रभो! 'सप्रथस्तमे' आपके अत्यधिक विस्तृत 'सख्ये शर्मन् तव' आनन्दस्वरूप सखाओं के कर्म में हम लोग स्थिर हों जिससे हमें कभी दुःख प्राप्त न हो और आपकी कृपा से हम लोग परस्पर प्रीतिरहित कभी न हो।

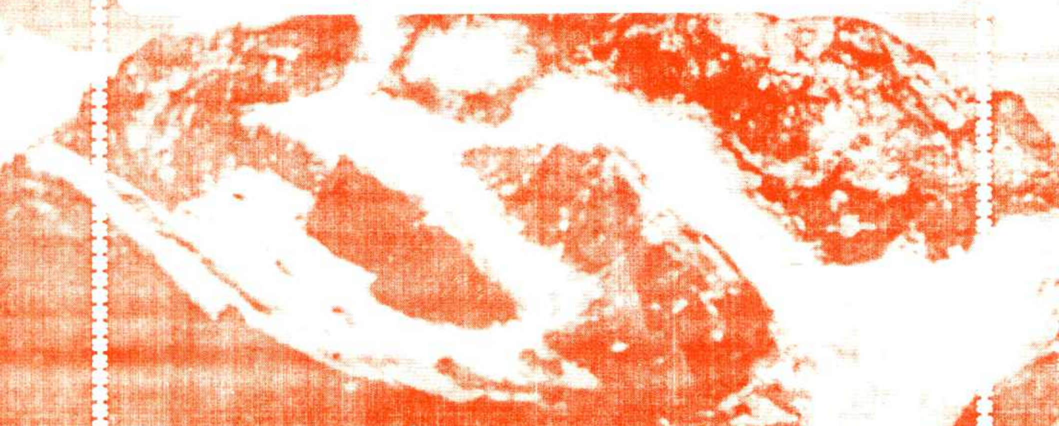

Oh Self-effulgent God, You are Wiser than the wisest, who are the Bestower of Supreme bliss on the learned and the righteous. Oh Lord, being most wonderful in this world and You are, the Friend who imparts felicity to all humanbeings. You are the abode of earth which in term are the dwellings of all living creatures. You are most conspicuous in all 'adhwaras' the great works meant for imparting true knowledge of humanity. Oh Supreme Spirit, may we be firmly established in Your Friendship and we may not at all have to come to grief in this life.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58